(IJTBM) 2013, Vol. No. 3, Issue No.II, Apr-Jun ISSN:2231-6868

उद्यमों में उपार्जन का वित्तीय मूल्यांकन

डॉ सदानंद राय

एसोसिएट प्रोफेसर वाणिज्य
ठंदिरा गांधी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बांगरमऊ उन्नाव उत्तर प्रदेश।

संक्षेप

भारत की स्वतन्त्रता के पष्चात् सार्वजनिक उद्यमों का तीव्र गति से विकास हुआ। गाँवों को महत्वपूर्ण औद्योगिक नगरों में बदलता, देष की औद्योगिक संरचना को दृढ़ और विकसित करना, आर्थिक विकास के कार्यक्रमों को नई दिषायें प्रदान करना तथा देष को आत्मनिर्भर बनाने में सहयोग देना यह सब तीव्र गति के अन्तर्गत किया गया। लोक उद्यम सर्वेक्षण के अनुसार यह कहा गया है कि, "औद्योगिक इकाइयों द्वारा अधिक्यों का सृजन और उनका उत्पादन उद्देष्यों के लिये प्रयोग ऐसा महत्वपूर्ण घटक है,जो किसी भी देष या समाज के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

परिचय

सार्वजनिक उद्यम को इस देष की अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व सौंपा गया। यह उनका उत्तरदायित्व है कि पर्याप्त अधिक्य का सृजन करें, जिससे देष के आर्थिक विकास को गति मिल सके।" वित्तीय दृश्टि से सार्वजनिक उद्यमों से यह आषा की जाती है कि वे अपने विकास एवं विस्तार कार्यक्रमों के लिये पर्याप्त मात्रा में आन्तरिक संसाधनों का सृजन करें। सार्वजनिक उद्यमों को अध्ययन की दृश्टि से तीन वर्गों में बाँटा गया हैं।

(अ) ऐसे उद्यम जो अभी निर्माणाधीन अवस्था में है
(ब) ऐसे उद्यम जो राश्ट्र के लिये वस्तुओं का निर्माण कर रहे है। और
(स) ऐसे उद्यम जो सेवा प्रदान करने में कार्यरत है।

सार्वजनिक उद्यमों को या तो केंद्र सरकार या राज्य सरकार या स्थानीय प्राधिकरण के पूर्ण स्वामित्व में होना चाहिए या संयुक्त रूप से उनमें से दो के स्वामित्व में होना चाहिए, सरकारी स्वामित्व का मतलब है कि इक्विटी का 50: से अधिक हिस्सा एक सार्वजनिक प्राधिकरण के पास है। यदि उद्यम सरकारी और निजी व्यक्तियों के स्वामित्व में है, तो राज्य के पास ऐसे उद्यमों के स्वामित्व में प्रमुख हिस्सा (कम से कम 51:) होना चाहिए।

भारतीय कंपनी अधिनियम की धारा 617 स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट करती है कि श्सरकारी कंपनी का मतलब किसी भी कंपनी से है जिसमें भुगतान की गई शेयर पूंजी का पचास प्रतिशत से कम नहीं केंद्र सरकार या किसी राज्य सरकार या केंद्र सरकार द्वारा आंशिक और आंशिक रूप से एक के पास है या अधिक राज्य सरकारें। इसके अलावा, सार्वजनिक निगम और विभाग के उपक्रम पूरी तरह से सरकार के स्वामित्व में हैं। यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि सार्वजनिक उद्यमों में सहकारी क्षेत्र के

तहत काम करने वाले उद्यम शामिल नहीं हैं। हाल ही में, उत्तर प्रदेश राज्य सरकार ने, हालांकि, सार्वजनिक क्षेत्र के तहत सहकारी उद्यमों को शामिल किया है।

वर्तमान में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के महत्व में गिरावट आयी है। वित्तीय वर्श 2006–2007 सार्वजनिक उद्यमों की इकाईयाँ घाटे में चल रही है। इस धाटे के पीछे एक महत्वपूर्ण षिकायत इन उद्यमों में उपार्जनों का कुषल प्रबन्ध न होना ळें सामान्यतः सार्वजनिक उद्यमों का उद्देष्य निजी क्षेत्र की तरह अधिकाधिक लाभ उपार्जित करना नहीं होता, बल्कि ये ऐसी सेवा एवं माल के उत्पादन में विषेश रूप से षामिल होते है। जो लाभ की अपेक्षा सामाजिक हित के लिये महत्वपूर्ण हो।

तालिका–1 सार्वजनिक उद्यमों में वित्तीय निश्पादन की प्रवृत्ति

	इकाइ	विनियुक्त पूंजी	कर–पूर्व कुल लाभ	कर–पूर्व व षुद्ध लाभ	कर–पष्चात् षुद्ध लाभ	कुल विनियुक्ति पूंजी पर प्रत्याय दर	कुलविनियुक्ति पूंजीपर षुद्ध प्रत्यय दर
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7) त्र 4ध्3	(8)
1970–71	87	3,600	150	20	–3	4.0	–01
छठी योजना							
1980–81	168	18,207	1,418	19	–0.203	7.8	–1.1
1981–82	188	21,935	2.654	1.025	446	12.1	+1.1
1982–83	188	21,935	2,654	1,025	446	12.1	+2.0
1981–83	193	26,590	3,469	1,547	618	13.1	+0.8
1984–85	207	36,382	4,628	2,099	909	12.7	+2.5
सातवी योजना							
1985–86	211	42,965	5,287	2,173	1,172	12.3	+2.8
1986–87	214	51,835	6,521	3,101	1,771	12.6	+3.4
1987–88	220	55,617	6,521	3,353	2,030	12.5	+3.6
1988–90	233	84,760	10,622	5,293	3,789	12.5	+4.5
1990–91	236	1,02,089	11,102	3,501	2,272	10,9	+2.0
1991–92	237	1,17,991	13,675	4,003	2,355	11.6	+2.0
आठवीं योजना							
1992–93	2.39	1,40,110	15,957	5,076	3,271	11.4	+2.3
1993–94	240	1,59,307	18,438	6,544	4,435	11.6	+2.8
1994–95	241	1,62,451	22,630	9,768	7,107	13.9	+4.4
1995–96	239	2,73,948	27,587	13,621	9,574	15.9	+5.5
1996–97	236	2,31,178	30,915	15,378	10,188	13,4	+4.4
नवीं योजना							
1997–98	236	2,49,855	37,206	19,216	13,582	14.9	+5.4
1998–99	235	2,65,093	39,727	19,702	13,203	15.0	+5.0
1999–2000	232	302,947	42,270	22,037	14,331	13.9	+4.7
2000–2001	234	331,372	48,767	24,967	15,653	14.7	+4.7
2001–2002	230	390,032	63,257	38,299	26,045	16.2	+6.7
दसवीं योजना							
2002–03	227	4,17,931	73,374	49,831	32,399	17.7	7.8
2003–04	230	4,52,910	95,120	71,285	53,084	21.0	11.7
2004–05	227	5,04,826	1,08,494	86,063	65,429	215	13.0
2005–06	226	5,76,042	1,29,942	1,03,214	80,730	22.56	14.01
2006–07	224	6,67253	1,53,950	1,23,435	1,00230	23.00	15.00

नोटः कर–पूर्व कुल लाभ = (षुद्ध लाभ + ब्याज + अदा किया गया निगम कर)

कुल विनियुक्त पूंजी = (अचल परिसम्पत घटा मूल्यह्रास जमा चल पूंजी)

स्रोतः– भारत सरकार, लोक उद्यम सर्वेक्षण, (2006–2007)

तालिका 1 में कुल विनियोजित पूंजी कर पूर्व लाभ और करपष्चात् लाभ 1970–71 से दिया गया है सार्वजनिक उद्यमों में उपार्जनों का प्रवृत्ति विष्लेशण करने का प्रयास है। तदुपरान्त विषेश रूप से खनिज एवं तेल उद्यमों का 5 वर्शों के आधार विष्लेशण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। सर्वप्रथम 1970–71 में कर पूर्व कुल लाभ अर्थात् सकल लाभ लगभग 150 करोड़ रुपये था अर्थात् 3600 करोड़ रुपये की विनियुक्ति पूँजी पर 4 प्रतिषत था। कर पूर्व कुल लाभ में लगातार वृद्धि हुई है। 1981–82 से 1993–94 के दौरान यह लगभग 11 से 13 प्रतिषत के बीच में रहा।

तालिका–2 सार्वजनिक उद्यमों में उपार्जनों में लाभदायकता का विष्लेशण (राषिकरोड़ रुपये में)

वर्श	उद्यमों की संख्या	विनियोजित पूंजी	सकल लाभ	कर पूर्व लाभ	कर पष्चात् लाभ
1995–96	239	1,3948	27,587	13,621	9,574
1996–97	236	2,31,178	30,915	15,378	10,188
1997–98	236	2,49,855	37,206	19,216	13,582
1998–99	235	2,65,093	39,727	19,702	13,203
1999–00	232	3,30,821	48,768	24,966	15,653
2001–02	230	3,90,032	63,257	38,299	26,045
2002–03	227	4,17,931	73,374	49,831	32,399
2004–05	227	5,04,826	1,03,491	86,063	65,429
2005–6	226	5,76,042	1,29,942	1,03,214	80,730
2006–07	224	6,67,253	1,53,950	1,23,435	1,00,230

स्रोतः– भारत सरकार, लोक उद्यम सर्वेक्षण 2006–07।

सार्वजनिक उद्यमों में लाभदायकता का विष्लेशण एवं मूल्यांकन

वित्तीय वर्श 1995–96 में सार्वजनिक उद्यमों की संख्या 239 तथा इनमें विनियोजित पूँजी 1,73,948 करोड़ रुपये थी। सकल लाभ 25,587 करोड़ रुपये, कर पूर्व लाभ 13,621 करोड़ रुपये, कर पष्चात् लाभ 9,574 करोड़ रुपये था। वित्तीय वर्श 1996–97 में सार्वजनिक उद्यमों की संख्या 236 तथा इसमें विनियोजित पूँजी 2,31,178 करोड़ रुपये थी। इस वर्श सकल लाभ 30,915 करोड़ रुपये, कर पूर्व लाभ 15,378 रुपये, तथा कर पष्चात लाभ 10,188 करोड़ रुपये हो गया। वित्तीय वर्श 1997–98 में सार्वजनिक उद्यमों की संख्या 236 तथा इसमें विनियोजित पूँजी 2,49,855 करोड़ रुपये थी। इस वर्श का सकल लाभ 37,206 करोड़ रुपये, कर पूर्व लाभ 19216 करोड़ रुपये, कर पष्चात् लाभ 13582 करोड़ रुपये था।

वित्तीय वर्श 1998–99 में सार्वजनिक उद्यमों की संख्या 235 तथा इसमें विनियोजित पूँजी 2,65,093 करोड़ रुपये थी। इस वर्श का सकल लाभ 39,727 करोड़ रुपये, करपर्वू लाभ 19,702 करोड़ रुपये, कर पष्चात् लाभ 13,203 करोड़ रुपये था।

वित्तीय वर्श 1999–2000 सार्वजनिक उद्यमों की संख्या 232 तथा इनमें विनियोजित पूँजी 3,02,947 करोड़ रुपये थी। वर्श का सकल लाभ 42,270 करोड़ रुपये, कर पूर्व लाभ 22,037 करोड़ रुपये, कर पष्चात् लाभ 14,331 रुपये था। वित्तीय वर्श 2000–01 में सार्वजनिक उद्यमों की संख्या 234 तथा इसमें विनियोजित पूँजी 3,30,821 करोड़ रुपये थी। इस वर्श का सकल लाभ 48,768 करोड़ रुपये, कर पूर्व लाभ 24,966 करोड़ रुपये, कर पष्चात् लाभ 15,653 करोड़ रुपये था।

वित्तीय वर्श 2001–02 में सार्वजनिक उद्यमों की संख्या 230 तथा इसमें विनियोजित पूँजी, 3,90,032 करोड़ रुपये थी। वर्श का सकल लाभ 62,257 करोड़ रुपये, कर पर्वू लाभ 38,299 करोड़ रुपये कर पष्चात् लाभ 26,045 करोड़ रुपये था। वित्तीय वर्श 2002–03 में सार्वजनिक उद्यमों की संख्या 227 तथा इसमें विनियोजित पूँजी 4,17,931 करोड़ रुपये थी। वर्श का सकल लाभ 73,374 करोड़ रुपये, कर पूर्व लाभ 49,831 करोड़ रुपये, कर पष्चात् लाभ 32,399 करोड़ रुपये था। वित्तीय वर्श 2003–04 में सार्वजनिक उद्यमों की संख्या 230 तथा इसमें विनियोजित पूँजी 4,52,910 करोड़ रुपये थी। इस वर्श का सकल लाभ 95120 करोड़ रुपये था।

वित्तीय वर्श 2004–05 में सार्वजनिक उद्यमों की सख्या 227 तथा इसमें विनियोजित पूँजी 5,04,826 करोड़ रुपये थी। इस वर्श का सकल लाभ 1,08,491 करोड़ रुपये, कर पूर्व लाभ 86,063 करोड़ रुपये, कर पष्चात् लाभ 65,429 करोड़ रुपये था। वित्तीय वर्श 2005–06 में सार्वजनिक उद्यमों की संख्या 226 तथा इसमें विनियोजित पूँजी 5,ख्6,042 करोड़ रुपये थी। इस वर्श का सकल लाभ 1,29,942 करोड़ रुपये कर पूर्व लाभ 1,03,214 करोड़ रुपये, कर पष्चात् लाभ 80,730 करोड़ रुपये था।

वित्तीय वर्श 2006–07 में सार्वजनिक उद्यमों की संख्या 224 तथा इसमें विनियोजित पूँजी 6,67,253 करोड़ रुपये थी। इस वर्श का सकल लाभ 1,53,950 करोड़ रुपये, कर पूर्व लाभ 1,23,435 करोड़ रुपये, कर पष्चात् लाभ 1,00,230 करोड़ रुपये था।

इस प्रकार सार्वजनिक उद्यमों में लाभदायकता के विष्लेशण के बाद कहा जा सकता है, कि वर्श 2006–07 में 1995–96 की तुलना में सार्वजनिक उद्यमों की संख्या में कमी आयी है। अर्थात् उनकी संख्या घटकर 224 रही गयी। जब कि 1995–96 में विनियोजित पूँजी 1,73,948 करोड़ रुपये से बढ़कर 6,67,253 करोड़ रुपये ही हो गयी तथा षुद्ध लाभ 9,574 करोड़ रुपये से बढ़कर 1,00,230 करोड़ रुपये हो गया।

तालिका संख्या 3 सार्वजनिक उद्यमों में विनियोजित पूँजी पर लाभ घटकों की प्रवृत्ति

वर्ष	विनियोजित पूँजी दर सकललाभ का प्रतिषत	विनियोजित पूँजीपर कर पष्चात लाभ का प्रतिषत
1995–96	15.9	5.5
1996–97	13.4	4.4
1997–98	14.9	5.4
1998–99	15.0	5.0
1999–00	13.9	4.7
2000–01	14.7	4.7
2001–02	16.2	6.7
2002–03	17.7	7.8
2003–04	210	11.7
2004–05	21.5	13.0
2005–06	225	14.01
2006–07	23.00	15.00

स्रेत– भारत सरकार, लोक उद्यम सर्वेक्षण 2006–07

वित्तीय वर्श 1995–96 में विनियोजित पूँजी पर सकल लाभ 15.9 प्रतिषत, कर पष्चात् लाभ का प्रतिषत 5.5 रहा। वित्तीय वर्श 1996–97 में विनियोजित पूँजी पर सकल लाभ का प्रतिषत 13.4, कर पष्चात् लाभ का प्रतिषत 4.40 रहा। वित्तीय वर्श 1997–98 में विनियोजित पूँजी पर सकल लाभ का प्रतिषत 15.00, कर पष्चात् लाभ का प्रतिषत 5.00 रहा। वित्तीय वर्श 1999–2000 में विनियोजित पूँजी पर सकल लाभ का प्रतिषत 13.9, कर पष्चात का 4.7 रहा।

वित्तीय वर्श 2000–01 में विनियोजित पूँजी पर सकल लाभ का प्रतिषत 14.7 प्रतिषत, कर पष्चात लाभ का प्रतिषत 4.7 प्रतिषत रहा। वित्तीय वर्श 2001–02 में विनियोजित पूँजी पर सकल लाभ का प्रतिषत 16.2 तथा कर पष्चात लाभ का प्रतिषत 6.7 रहा।

वित्तीय वर्श 2002–03 में विनियोजित पूँजी पर सकल लाभ का प्रतिषत 17.7 कर पष्चात् लाभ का प्रतिषत 7.8 रहा। वित्तीय वर्श 2003–04 में विनियोजित पूँजी पर सकल लाभ का प्रतिषत 21.00 प्रतिषत, कर पष्चात् लाभ का प्रतिषत 11.7 रहा।

वित्तीय वर्श 2004–05 में विनियोजित पूँजी पर सकल लाभ का प्रतिषत 21.5, कर पष्चात लाभ प्रतिषत 13.00 प्रतिषत रहा। वित्तीय वर्श 2005–06 में विनियोजित पूँजी पर सकल लाभ का प्रतिषत 22.56, कर पष्चात लाभ प्रतिषत 14.01 प्रतिषत रहा।वित्तीय वर्श 2006–07 में विनियोजित पूँजी पर सकल लाभ का प्रतिषत 23. 00, कर पष्चात लाभ प्रतिषत 15.00 प्रतिषत रहा।

विनियोजित पूँजी से अभिप्राय कुल दीर्घकालीन एवं अल्पकालीन पूँजी से है। इस अनुपात के द्वारा विनियोजित पूँजी की कार्यक्षमता ज्ञात की जा सकती है। इस अनुपात की तुलना इसी प्रकार के गत वर्ष के अनुपात से करके पूँजी की कार्यक्षमता ज्ञात की जा सकती है।

सन्दर्भ

1. एलिसिया गजली और माइकल लैम्बर्ट, (2006), प्रबंधन लेखा उत्तरी अमेरिका, सेज प्रकाशन
2. फ्लोरेंस, पी. सार्जेंट और वॉकर ग्लिबोर्ट (2004), एफिशिएंसी एंड इट्स मैनेजमेंट लंदनरू जॉर्ज एलन एंड अनविन
3. हिंगोरानी, एन.एल., रामनाथन ए.आर. और ग्रेवाल टीएस (2005), प्रबंधन लेखा नई दिल्ली, प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया।

IJTBM